BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR

BIHAR UNIVERSITY, MUZAFFARPUR

PIN-842001 (BIHAR)

Website:-www.brabu.net

Ref:..... **Date:.....**

PRINT MEDIA COVERAGE ON B.R.A.BIHAR UNIVERSITY NEWS COMPILED BY MEDIA CELL (13.12.2024)

HINDUSTAN, MUZAFFARPUR
DATE : 13.12.2024, PAGE-07

कर्मों में कुशलता ही योग इसे अपनाएं युवा : वीसी

मुजफ्फरपुर,प्रसं। बीआरएबीयू के दर्शनशास्त्र विभाग व भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद की तरफ से गुरुवार को योगः सिद्धांत और चिकित्सा विषय पर सेमिनार हुआ। उद्घाटन विवि के कुलपति प्रो. दिनेश चंद्र राय ने किया।

उन्होंने कहा कि गीता में कहा गया है कि कर्मों में कुशलता ही योग है। युवाओं को इसे अपनाना चाहिए। मुख्य अतिथि मिथिला विवि दरभंगा कामेश्वर सिंह दरभंगा विवि के प्रो. लक्ष्मी निवास पांडेय ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृत ज्ञान परंपरा और योग एक दूसरे से अभिन्न हैं। विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद महात्मा गांधी केंद्रीय विवि के डॉ. सच्चिदानंद सिंह ने कहा कि योग से बिहार का गहरा संबंध रहा है। बीएचयू से आये प्रो. अरविंद कुमार राय ने कहा कि दुःख का निदान कैसे संभव है, यह योग दर्शन ही बतलाता है। योग के अनुसार चित्त वृत्तियों का निरोध ही दुख निरोध है, जिसके लिए समस्त मानव जगत प्रयत्नशील है। इस अवसर पर विवि दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी किया गया। उद्घाटन सत्र के बाद दो अकादमी सत्र हुआ। इसमें डॉ. रमण सिंह और डॉ. भारत भूषण ने विचार रखे। इसकी अध्यक्षता प्रो. एके राय व डॉ. संजय कुमार ने की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. लक्ष्मी कु. साह ने की। संयोजक प्रो. सरोज कुमार वर्मा थे।

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR

BIHAR UNIVERSITY, MUZAFFARPUR

PIN-842001 (BIHAR)

Website:-www.brabu.net

Ref:..... **Date:.....**

DAINIK JAGRAN, MUZAFFARPUR
DATE : 13.12.2024, PAGE-04

कर्मों में कुशलता ही योग है, जीवन में इसका काफी महत्व : कुलपति

सेमिनार में लोकार्पण करते कुलपति व अन्य ● जागरण

जागरण संवाददाता, मुजफ्फरपुर : बीआरए बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दिनेश चंद्र राय ने कहा कि ''कर्मों में कुशलता ही योग है'' को अपने अपने कार्य क्षेत्र में अपनाने की आवश्यकता है। जीवन में योग का काफी महत्व है। हर व्यक्ति को अपनाना चाहिए। उक्त बातें सीनेट हाल में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली की ओर से ''योग : सिद्धांत और चिकित्सा' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के दौरान कहीं।

विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्र विभाग की ओर से आयोजित सेमिनार के मुख्य अतिथि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा के प्रो. लक्ष्मी निवासी पाण्डेय ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृत ज्ञान परंपरा और योग का एक दूसरे से अभिन्न संबंध बताया। विशिष्ट अतिथि महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. सच्चिदानंद सिंह ने बताया कि योग से बिहार का गहरा संबंध रहा है। बीएचयू दर्शनशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. अरविंद कुमार राय ने कहा कि सांख्य दर्शन ने समस्त प्रकृति त्रिविध दुःख के अधीन है कहकर दुःख की प्रकृति पर तो प्रकाश डाला, लेकिन दुःख का निदान कैसे संभव है। यह योग दर्शन ही बताता है। योग के अनुसार चित्त वृतियों का निरोध ही दुख-निरोध है, जिसके लिए समस्त मानव जगत प्रयत्नशील है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय दर्शनशास्त्र विभाग की ओर से प्रकाशित 'स्मारिका का विमोचन भी किया गया। संगोष्ठी के आयोजन सचिव प्रो. राजेश्वर सिंह ने प्रतिपाद्य आयोजन के बारे में बताया।

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR

BIHAR UNIVERSITY, MUZAFFARPUR

PIN-842001 (BIHAR)

Website:-www.brabu.net

Ref:..... **Date:.....**

PRABHAT KHABAR,MUZAFFARPUR, DATE : 13.12.2024, PAGE-04

बीआरएबीयू के दर्शनशास्त्र विभाग में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नयी दिल्ली ने आयोजित की संगोष्ठी

कर्मों में कुशलता ही योग, इसे कार्य क्षेत्र में भी अपनाएं

वरीय संवाददाता, मुजफ्फरपुर

बीआरएबीयू के दर्शनशास्त्र विभाग में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नयी दिल्ली की ओर से, योग : सिद्धांत व चिकित्सा विषय पर संगोष्ठी हुई. उद्घाटन वीसी प्रो दिनेश चंद्र राय ने किया.

उन्होंने गीता की उक्ति, कर्मों में कुशलता ही योग है, को अपने कार्य क्षेत्र में अपनाने की जरूरत पर बल दिया. उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो लक्ष्मी निवास पांडेय, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय ने बताया कि भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृत ज्ञान परंपरा और योग का एक-दूसरे से अभिन्न संबंध है.विशिष्ट अतिथि डॉ सच्चिदानंद सिंह, ओएसडी कुलसचिव, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय ने बताया कि योग से बिहार का गहरा संबंध रहा है. बीएचयू के दर्शनशास्त्र एवं धर्म विभाग के अवकाश प्राप्त आचार्य एवं अध्यक्ष प्रो अरविंद राय ने भी विचार रखे. कहा- सांख्य दर्शन ने समस्त प्रकृति त्रिविध दुःख के अधीन है. दुःख की प्रकृति व इसका निदान कैसे संभव है, यह योग दर्शन ही बताता है. सेमिनार में देशभर के रिसोर्स पर्सन जुड़े. जोधपुर से प्रो. अवतार लाल मीणा, वर्धा से प्रो. जयंत उपाध्याय, जम्मू:कश्मीर से मनोदैहिक चिकित्सक भारत भूषण गुप्ता, आरा से प्रो किस्मत, मधेपुरा से प्रो सुधांशु शेखर सहित लगभग 200 से अधिक लोग शामिल हुए. इस अवसर पर शाम में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया. जिसमें आकांक्षा, अंजली, रत्ना, समीक्षा, बरखा, आस्था, खुशबू, ऋषिका पोद्दार, साक्षी, प्रणव प्रताप आर्य, शाश्वत श्याम, छोटू, राजा, अभिषेक व कृष्णा कुमार ने भाग लिया.

विवि के सीनेट हॉल में सेमिनार को संबोधित करते कुलपति.

स्मारिका का विमोचन

दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा प्रकाशित स्मारिका का विमोचन भी किया गया. संपादक प्रो सरोज वर्मा, विवि के दर्शनशास्त्र विभाग ने स्मारिका के प्रकाशन के संबंध में विचार रखे. अतिथियों का स्वागत विभाग की अध्यक्ष प्रो लक्ष्मी साह ने किया. सचिव प्रो राजेश्वर सिंह, प्रो राजीव, प्रो राजेश्वर सिंह, डॉ रेणु बाला व डॉ पयोली आदि उपस्थित रहे.

दो अकादमी सत्र भी हुए

उद्घाटन सत्र के बाद दो अकादमी सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ रमण सिंह व डॉ भारत भूषण ने अपने विचार रखे. इस सत्र की अध्यक्षता प्रो एके राय व संयोजक डॉ संजय कुमार ने किया. दूसरे अकादमी सत्र की अध्यक्षता प्रो लक्ष्मी व संयोजक प्रो सरोज वर्मा थे. इस सत्र में प्रो अवतारलाल मीणा, प्रो किस्मत सिंह व डॉ वरुण त्रिपाठी ने विचार रखे.